COTTON Innovate
Weekly Newsletter from Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Issue :3, Volume : 2, February 2016

A weekly newsletter from ICAR-CICR

# One - day Cotton Seminar organized under NFSM for North zone

## at ICAR-CICR Regional Station, Sirsa

One day cotton seminar was organized jointly by Department of Agriculture, Cooperation and Farmers Welfare and Indian Council of Agricultural Research, Ministry of Agriculture and Farmers Welfare under National Food Security Mission (NFSM) for North Zone on 8th February 2016 at ICAR-CICR Regional Station, Sirsa, Haryana.

An event on “Cleanliness Mission of weed eradication for whitefly and Cotton Leaf Curl Disease management” under the umbrella of “Swatch Bharat” was organized on the occasion which was graced by The Hon’ble DDG (CS), ICAR along with the other dignitaries. The programme was planned with a view to create awareness among the scientists and agricultural extension officials to remove whitefly hosts including weeds near the field bunds and the fellow lands. Dr. K. R. Kranthi Director-CICR, Dr A. H. Prakash, Project Coordinator & Head, CICR, Regional Station, Coimbatore, Dr. D. Monga, Head CICR RS Sirsa, Dr S. K. Malhotra, Agri. Commissioner, Dr. S.N. Sushil PPA, Dr. AP Singh Additional Commissioner (Crops) and Directors of Research & Directors of Extension and their representatives from PAU, HAU, RAU; Regional Directors of SAUs stations from Bhatinda, Faridkot, Sirsa and Joint Directors/Deputy Directors (Agri.), Chief Agricultural Officers, KVK in charges from Punjab, Haryana, Rajasthan along with the CICR Regional Station and Coimbatore staff and NGO representatives from BCI also participated in the event.

The basic theme of the seminar was to discuss and finalize the strategies for whitefly management with special reference to tolerant hybrids and spray schedule. Hon’ble DDG (CS) stressed on important points like subsidy on desi cotton seed, timely sowing, timely canal water availability, N application management, label claim pesticides availability, check on spurious pesticides, weed and insect pest management, use of suction/yellow sticky traps. He also emphasized that CICR Sirsa will act as a nodal point with close coordination of three states. He also made a mention about the container management project of pesticide companies and the need to start such activity in few villages in the region.

Dr. SK Malhotra, Agri. Commissioner, GOI cited possible reason for the epidemic due to mono cropping, erratic weather, excess use of chemical pesticides etc. He emphasized for development of our own transgenic with multiple resistance through pyramiding of genes, proper pest monitoring and advisory services for the farmers through M-portal SMS, etc. Dr S. N. Sushil, PPA, GOI advised for need of more options with respect to insecticides as a total of 35 pesticides were recommended for whitefly management. Dr. Kranthi, Director CICR, stressed that whitefly management should follow four steps in a matrix i.e. timely sowing; use of tolerant varieties, proper urea management and IRM based IPM. Dr. A H Prakash, PC (AICRP on Cotton) briefed about the activities carried out under AICCP for whitefly management in North Zone. Dr Rishi Kumar, Principal Scientist, Agricultural Entomology from the Regional Station presented the data of resistance development generated on insecticides commonly used against the whiteflies and research plan for 2016. The representative of the State Agricultural University presented their respective strategies in the meeting. This was followed by inputs and preparedness of state departments of agriculture of the region. Later the participants in general raised several important issues which were discussed during the program.

## News Paper Clippings

# राष्ट्रीय कपास सेमिनार : देसी कपास पर सफेद मक्खी का असर कम

## कपास की बीमारियों पर देश भर के वैज्ञानिकों में हुई मंत्रणा, कई देशों के वैज्ञानिक जुटे हैं समस्या का समाधान ढूंढने में

अमर उजाला ब्यूरो

सिरसा। कपास की फसल में बीमारियों से चिंतित इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर ने बीमारियों की रोकथाम के लिए देश भर के वैज्ञानिकों से मंत्रणा के लिए सेमिनार का आयोजन किया है। हालांकि कई देशों के वैज्ञानिक सफेद मक्खी की बीमारी की रोकथाम के लिए उपाय ढूंढने में पहले से ही जुटे हुए हैं पर किसानों का कपास की खेती से मोह भंग होता देख कर देश के वैज्ञानिकों ने कसरत को और तेज कर दिया है।

इस बार बीमारियों के कारण कपास की फसल 50 से 70 फीसदी क्षतिग्रस्त हो गई थी जिस कारण किसानों ने इस फसल से तौबा कर ली है। अब भारतीय कपास अनुसंधान केंद्र द्वारा बीमारियों के कम प्रभाव में आने वाली किस्मों पर शोध की जा रही है ताकि किसानों को ऐसी किस्मों की बिजाई की सिफारिश की जाए जिनमें बीमारियां कम आएं। इसी कड़ी में सिरसा के केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र में सोमवार को राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के शुभारंभ अवसर पर सीआईसीआर के अध्यक्ष डॉ. दलीप मोंगा ने सभी वैज्ञानिकों का स्वागत किया।

सेमिनार के दौरान मौजूद कृषि वैज्ञानिक।

सेमिनार में उपस्थित वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च के डीडीजी डॉ. जीत सिंह संधू ने कहा कि देसी कॉटन की फसल सफेद मक्खी की बीमारी से पूर्ण रूप से सुरक्षित है जो कि विभिन्न प्रकार के शोध से साबित हो चुका है तथा इसके अधिक से अधिक प्रयोग के लिए केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र द्वारा बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक भी किया जा रहा है। यहां राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत आयोजित एक दिवसीय सेमिनार में अपने संबोधन में डॉ. संधू ने बताया कि जिस प्रकार से वर्ष 2007-08 में कपास में मिलीबग की बीमारी से फसल चौपट हो गई थी और उसका जड़ से नाश करने के लिए हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने दिन रात एक कर शोध किए थे, उसी प्रकार गत वर्ष 2015 में सफेद मक्खी के प्रकोप से नष्ट हुई फसल के कारण किसानों को हुए नुकसान को देखते हुए एक बार फिर इन तीनों राज्यों के कृषि वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं तथा उम्मीद है कि जल्द ही इस बीमारी का भी जड़ से खात्मा करने में सफलता हासिल कर ली जाएगी। इसी उद्देश्य के लिए आज उक्त सेमिनार का आयोजन किया गया है। उन्होंने बताया कि देसी कॉटन का बाजार मूल्य भी ठीक है। उन्होंने बताया कि फसलों में बीमारी का आंकलन करने तथा उसके समाधान के लिए सीसीआर को नोडल सेंटर बनाया गया है, जिनके अधिकारी संबंधित क्षेत्रों के किसानों को उनके मोबाइल पर बीमारी के कारण तथा उसकी रोकथाम के लिए समय-समय पर सुझाव देंगे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह रिव्यू मीटिंग भी आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया है। किसानों को फसलों की बीमारी व उसके नष्ट होने से होने वाले आर्थिक नुकसान से बचाव के लिए पौधे की सुरक्षा से संबंधित सलाह, पेस्टीसाइड की नियमित जांच, फसलों के व्यवस्थित प्रबंधन के लिए लाइव डेमोस्ट्रेशन देने, कीटनाशकों के प्रयोग आदि के संबंध में भी समय-समय पर सुझाव दिए जाएंगे। उन्होंने यह भी बताया कि केंद्रीय कपास अनुसंधान द्वारा किसानों के हित में गुणवत्तापरक बीज, पेस्टीसाइड व इंसेक्टीसाइड की सिफारिशें की जाएंगी ताकि उनका प्रयोग कर किसान फसलों को बीमारियों से सुरक्षित रख सकें। सेमीनार में डॉ. एचच प्रकाश, डॉ. के आर क्रांति, डॉ. एसएस सिवाच, डॉ. बलविंद्र, डॉ. सी चटोपाध्याय, डॉ. दलीप मोंगा, डॉ. ऋषि कुमार, डॉ. आरए मीणा, डॉ. वाईपी सिंह, डॉ. लक्ष्यवीर बैनीवाल, डॉ. आत्माराम गोदारा, राजेंद्र शेरडिया, बृजलाल सहित सभी केवीके इंचार्ज आदि उपस्थित थे।

### 'मौसम से पनपी सफेद मक्खी की बीमारी'

भारत सरकार के पौधा संरक्षण सलाहकार डा. एसएम सुशील ने सेमिनार में उपस्थित वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए कहा कि कपास व नरमा की फसल में सफेद मक्खी जैसी खतरनाक बीमारी के पनपने का मुख्य कारण देसी से बिजाई करना तथा मौसम का प्रतिकूल होना रहा है। यह निष्कर्ष कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सफेद मक्खी के पनपने के कारणों पर किए गए शोध में निकला है। उन्होंने यह भी कहा कि किसानों द्वारा इसकी रोकथाम के लिए सीआईसीआर द्वारा सुझाव की जगह पेस्टीसाइड डीलर द्वारा दी गई सलाह के अनुसार कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग किया गया, जो इस बीमारी के बढ़ने का मुख्य कारण रहा। उन्होंने बताया कि केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र द्वारा विभिन्न प्रकार की फसली बीमारियों से सुरक्षा के लिए 35 प्रकार की कीटनाशकों का सुझाव दिया गया है, लेकिन देखा गया है कि अधिकतर किसान जागरूकता के अभाव में इनका प्रयोग ही नहीं करते, जिससे उन्हें अधिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने बताया कि यह भी देखा गया है कि बिजाई के दौरान किसान गुणवत्तापरक बीज का प्रयोग नहीं करते। केवल बीज विक्रेताओं के कहने पर सभी किसान से सलाह मशविरा कर बीज उठा लाते हैं, जिसका भी नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कहा कि पंजाब में गत वर्ष फसलों के सैपल लिए गए थे, जिसमें से करीब 80 प्रतिशत सैपल फेल पाए गए अर्थात खराब बीजों का प्रयोग किसानों द्वारा किया गया। सेमीनार में उपस्थित भारत सरकार की सलाहकार समिति के कृषि आयुक्त डॉ. एसके मल्होत्रा ने कहा कि सफेद मक्खी के लिए प्रत्येक जिला की मुद्रा की प्रक्रिया के आधार पर रणनीति बनाई जा रही है, जिसके तहत किसानों को ट्रेनिंग दी जाएगी और उनकी जिम्मेदारियां तय की जाएंगी। सफेद मक्खी के प्रकोप को देखते हुए हाईब्रिड बीजों की सिफारिश की जाएगी तथा दवाओं व खाद का कब और कितनी मात्रा में प्रयोग किया जाना है, रंगे के लिए किसी प्रकार की तकनीक अपनानी चाहिए, इसके संबंध में मैसेज कर किसानों को अवगत करवाया जाएगा।

# सफेद मक्खी की बीमारी से सुरक्षित है देसी कॉटन की फसल : डा. संधू

पल पल न्यूज: सिरसा, 8 फरवरी। देसी कॉटन की फसल सफेद मक्खी की बीमारी से पूर्ण रूप से सुरक्षित है जो कि विभिन्न प्रकार के शोध से साबित हो चुका है तथा इसके अधिक से अधिक प्रयोग के लिए केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र द्वारा बढ़ावा देने के लिए किसानों को जागरूक भी किया जा रहा है। यह बात इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च डा. जीत सिंह संधू ने सीआईसीआर में पत्रकारों से संक्षित बातचीत में कही। वे आज यहां राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत आयोजित एक दिवसीय सेमीनार में शिरकत करने आए थे। उन्होंने बताया कि जिस प्रकार से वर्ष 2007-08 में कपास में मिलीबग की बीमारी से फसल चौपट हो गई थी और उसका जड़ से नाश करने के लिए हरियाणा, पंजाब व राजस्थान के कृषि वैज्ञानिकों ने दिन रात एक कर शोध किए थे, उसी प्रकार गत वर्ष 2015 में सफेद मक्खी के प्रकोप से नष्ट हुई फसल के कारण किसानों को हुए नुकसान को देखते हुए एक बार फिर इन तीनों राज्यों के कृषि वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं तथा उम्मीद है कि जल्द ही इस बीमारी का भी जड़ से खात्मा करने में सफलता हासिल कर ली जाएगी। इसी उद्देश्य के लिए, आज उक्त सेमीनार का आयोजन किया गया है। उन्होंने बताया कि देसी कॉटन का बाजार मूल्य भी ठीक है। उन्होंने बताया कि फसलों में बीमारी का आंकलन करने तथा उसके समाधान के लिए सीसीआर को नोडल सैंटर बनाया गया है, जिनके अधिकारी संबंधित क्षेत्रों के किसानों को उनके मोबाइल पर बीमारी के कारण तथा उसकी रोकथाम के लिए समय-समय पर सुझाव देंगे। इसके अतिरिक्त प्रत्येक माह रिव्यू मीटिंग भी आयोजित करने का भी निर्णय लिया गया है। किसानों को

### देरी से बिजाई व मौसम के कारण पनपी सफेद मक्खी की बीमारी

कपास व नरमा की फसल में सफेद मक्खी जैसी खतरनाक बीमारी के पनपने का मुख्य कारण किसानों द्वारा देरी से बिजाई करना तथा मौसम का प्रतिकूल होना रहा है। यह निष्कर्ष कृषि वैज्ञानिकों द्वारा सफेद मक्खी के पनपने के कारणों पर किए गए शोध में निकला है। यह बात भारत सरकार के पौधा संरक्षण सलाहकार डा. एसएम सुशील ने केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र के क्षेत्रीय संस्थान में नॉर्थ जोन के कृषि वैज्ञानिकों की राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत आयोजित एक दिवसीय कॉटन सेमीनार में कही। उन्होंने यह भी कहा कि किसानों द्वारा इसकी रोकथाम के लिए सीआईसीआर <शेष पेज 2 पर...

>शेष पेज 2 पर...

सफेद मक्खी का

फसलों की बीमारी व उसके नष्ट होने से होने वाले आर्थिक नुकसान से बचाव के लिए पौधे की सुरक्षा से संबंधित सलाह, पेस्टीसाइड की नियमित जांच, फसलों के व्यवस्थित प्रबंधन के लिए लाईव डैमोंस्ट्रेशन देने, कीटनाशकों के

उपयोग से संबंधित तकनीक, नाइट्रोजन के प्रयोग आदि के संबंध में भी समय-समय पर सुझाव दिए जाएंगे। उन्होंने यह भी बताया कि केंद्रीय कपास अनुसंधान द्वारा किसानों के हित में गुणवत्तापरक बीज, पेस्टीसाइड व इन्सैक्टीसाइड की सिफारिशें की जाएंगी ताकि उनका प्रयोग कर किसान फसलों को बीमारियों से सुरक्षित रख सकें। इसके अतिरिक्त प्रत्येक गांव में एक कार्यक्रम का भी आयोजन करने का प्रावधान रखा गया है, जिसके तहत वहां की फसलों का सर्वे किया जाएगा और किसानों को बीमारियों व उनके समाधान के उपाय बताए जाएंगे।

**देरी से बिजाई व**

द्वारा सुझवित नहीं बल्कि पेस्टीसाइड डीलर द्वारा दी गई सलाह के अनुसार कीटनाशकों का अंधाधुंध प्रयोग किया गया, जो इस बीमारी के बढ़ने का मुख्य कारण रहा। उन्होंने बताया कि केंद्रीय कपास अनुसंधान केंद्र द्वारा विभिन्न प्रकार की फसली बीमारियों से सुरक्षा के लिए 35 प्रकार के कीटनाशकों का सुझाव दिया गया है, लेकिन देखा गया है कि अधिकतर किसान जागरूकता के अभाव में इनका प्रयोग ही नहीं करते, जिससे उन्हें अधिक नुकसान उठाना पड़ता है। उन्होंने बताया कि यह भी देखा गया है कि बिजाई के दौरान किसान गुणवत्तापरक बीज का प्रयोग नहीं करते। केवल बीज विक्रेताओं के कहने पर सभी किसान से सलाह मशविरा कर बीज उठा लाते है, जिसका भी नुकसान किसानों को उठाना पड़ता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कहा कि पंजाब

में गत वर्ष फसलों के सैंपल लिए गए थे, जिसमें से करीब 80 प्रतिशत सैंपल फेल पाए गए अर्थात खराब बीजों का प्रयोग किसानों द्वारा किया गया। सेमीनार में उपस्थित भारत सरकार की सलाहकार समिति के कृषि आयुक्त डा. एसके मल्होत्रा ने कहा कि सफेद मक्खी के लिए प्रत्येक जिला की मुद्रा की प्रक्रिया के आधार पर रणनीति बनाई जा रही है, जिसके तहत किसानों को ट्रेनिंग दी जाएगी और उनकी जिम्मेदारियां तय की जाएंगी।

**The Tribune**
BATHINDA | TUESDAY | 9 FEBRUARY 2016

# Experts discuss ways to control whitefly

SUSHIL MANAV
TRIBUNE NEWS SERVICE

**What do experts suggest**

- Monitoring and surveillance
- Shortlisting of hybrids found lesser prone to the disease
- Early sowing of crop
- Management of weeds
- Scheduling of pesticides
- Bringing more land under desi cotton

SIRSA, FEBRUARY 8
Experts from the Indian Council of Agriculture Research (ICAR), agriculture universities and officials from the Agriculture Departments of Haryana, Punjab and Rajasthan have come out with a common strategy to save cotton crop from whitefly in the coming kharif season.

Dr Jeet Singh Sandhu, Deputy Director General (Crop Sciences), ICAR, headed the 'strategic review meeting for the management of whitefly' at the Central Institute of Cotton Research (CICR) here today.

The strategy includes monitoring and surveillance, shortlisting of hybrids found lesser prone to the disease, early sowing of crop, management of weeds, scheduling of pesticides, bringing more land under desi cotton and holding monthly review meetings among others.

Besides, environment-friendly methods such as suction pumps and yellow sticky traps have also been developed to control whitefly.

The Sirsa-based regional station of the CICR has been made the nodal centre for the purpose.

Cotton crop had suffered 50 to 100 per cent damage in Bhiwani, Hisar, Jind, Fatehabad and Sirsa districts of Haryana; Moga, Faridkot, Sangrur and Barnala districts of Punjab; and Hanumangarh and Sri Ganganagar districts of Rajasthan last year.

The crop was grown on 14 lakh hectares in the region – 5.80 lakh hectares in Haryana, 4.2 lakh hectares in Punjab and 4 lakh hectares in Rajasthan.

"Whitefly not only damaged cotton, but other crops such as guar, soya bean and pulses also. The next target could be potatoes," said Sandhu, while talking to The Tribune.

He said a common advisory had been developed by the ICAR, CICR, Chaudhary Charan Singh Haryana Agriculture University, Hisar, Punjab Agriculture University, Ludhiana and Rajasthan Agriculture University, Bikaner, to meet the challenge this year.

"We will be in the field for four months after the cotton is sown in May this year. We will also reach out to farmers through voice messages under the e-Kapas programme," said Dr Dalip Monga, Station Director, CICR, Sirsa.

Mantis bug waiting for its prey

Produced and Published by: Dr. K. R. Kranthi, Director, CICR, Nagpur
Chief Editor : Dr. S. M. Wasnik
Editors : Dr. J. Annie Sheeba, Dr. Vishlesh Nagrare, Dr. J. Amutha, Dr. M. Saravanan
Digital Editor, design & Media Support : Mr. M. Sabesh

Citation : Cotton Innovate, Issue-3, Volume-02, 2016, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur.

Publication Note: This Newsletter presented online at http://www.cicr.org.in/cotton_innovate.html

Cotton Innovate is the Open Access CICR Newsletter

The Cotton Innovate – is published weekly by
ICAR-Central Institute for Cotton Research
Post Bag No. 2, Shankar Nagar PO, Nagpur 440010
Phone : 07103-275536; Fax : 07103-275529;
email: cicrnagpur@gmail.com, director.cicr@icar.gov.in